

वर्तमान संगमयुग का महत्व

1. यह संगमयुग का समय बुद्धि को वरदानों से भरपूर करने का समय है।
2. स्वयं को सर्वशक्तिमान की सर्वशक्तियों से फुलचार्ज रखने का समय है।
3. निरन्तर भगवान की छत्रछाया में निश्चिन्त रहने का समय है।
4. अपने मन, बुद्धि को भगवान के महावाक्यों से भरपूर करने का समय है।
5. भगवान के साथ सर्व संबंधों का अनुभव करने का समय है।
6. निरन्तर अपने भाग्य की स्मृति में रहकर खुशी में, मौज में रहने का समय है।
7. इन्द्रियों के आकर्षण से परे रहकर अतिन्द्रिय सुख में रहने का समय है।
8. सारे कल्प की प्रालब्ध जमा करने का समय अभी ही है।
9. हल्के बनकर अव्यक्त स्थिति से संसार को प्योर वायब्रेशन देने का समय है।
10. संसार की भटकती, तड़फती आत्माओं को सकाश देने का समय है।
11. रोगी, भोगी आत्माओं को विकारों की आग से निकाल शीतलता का अनुभव कराने का समय है।
12. प्रकृति के पांचों तत्वों, सभी ग्रहों, महाद्वीपों को सतोप्रधान बनाने का समय है।
13. स्व के विकर्मों को भस्म कर पुण्य का खाता जमा करने का समय है।
14. स्वयं को निरन्तर ज्ञानयुक्त, योगयुक्त, युक्तियुक्त, राजयुक्त बनाने का समय है।
15. स्वयं को सर्वखजानों से संपन्न बनाकर ईश्वरीय सेवा में एवररेडी रखने का समय है।
16. स्वयं को व्यर्थ से मुक्त रखकर निरन्तर समर्थ स्थिति में रहने का समय है।
17. परमात्मा की मुहब्बत में समाये रहकर मेहनत से मुक्त रहने का समय है।
18. कदम-कदम पर परमात्मा की पूरी मदद अनुभव करने का समय है।
19. निराकारी स्थिति, न्यारा-प्यारा, साक्षीद्रष्टा, उपराम रहने का समय है।
20. अपनी स्थिति को शक्तिशाली, सुखदायी, आनंदमय बनाने का समय है।
21. संसार की अनेकानेक आत्माओं को मुक्ति, जीवनमुक्ति का अनुभव कराने का समय है।
22. सर्व आत्माओं के प्रति शुभ कामना शुभ भावना रखने का समय है।
23. सेवा में तत्पर रहकर दुआयें देने, दुआयें लेने का समय है।
24. वायुमण्डल, वातावरण में पावरफुल वायब्रेशन प्रवाहित करने का समय है।
25. स्वयं से ईश्वरीय व दैवी संस्कारों का दूसरों को अनुभव कराने का समय है।
26. दाता, विधाता व वरदाता बनकर सबको वरदान देने का समय है।
27. सबको सम्मान देने का समय है, एक-दो को अपने से आगे बढ़ाने का समय है।
28. सर्व के प्रति कल्याण की भावना, रहम की भावना, बेहद की भावना में रहने का समय है।
29. पुराने देह, पुरानी दुनिया में मेहमान बनकर रहने का समय है।
30. अपने को सरल बनाकर संगठन में एडजस्ट करके चलने का समय है।
31. अपने सर्वोच्च स्वमान में रहकर सबको सुख, शान्ति की किरणें देने का समय है।